Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7216800

Roll No. 23262000054
Total Mark 36/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A090101T - BASIC PSYCHOLOGICAL PROCESSES

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	2/5						
1D	3/5						
1E	2/5						
1F	3/5						
1G	2/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	6/15						
6	NA/15						
7	6/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 28/12/23 Shift: 8to10 AM Room No.: 28
Paper Code: A090101T Subject: Psycho Year/Sem: Ist
Name of Candidate: Shivangi Dixit
Roll No.: 2 3 2 6 2 0 0 0 5 4

Signature of Candidate: Shivangi Dixit
Signature of Invigilator: Chush
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks

Total Marks in Words

A090101T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: B.A. (Fine Arts)
Session: 2023-24 Year/Semester: Ist
Subject Name: Psychology
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 9 0 1 0 1 T

Exam Date: 2 8 1 2 2 0 2 3

Name of Candidate: S H I V A N G I D I X I T

Father's Name: R A M K U M A R D I X I T

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 1 5

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 1 5

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam

संस्थागत Regular ●	भूतपूर्व छात्र Ex- Student ○
व्यक्तिगत Private ○	बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

7216800

A090101T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 6 3 6 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 2 0 0 0 0 5 4

पेपर कोड Paper Code: A 0 9 0 1 0 1 T

Signature of Candidate: Shivangi Dixit

Signature of Invigilator: Chush

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. कॉलम में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त पन्ना नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no . corrections shall be entertained by the university
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code A0901011T

उत्तर - 1 (a)

मनोविज्ञान – मनोविज्ञान शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के Psyche और Logo शब्द से हुई। जिसमें Psyche का अर्थ है आत्मा तथा Logo का अर्थ है ~~आत्मा~~ अध्ययन ज्ञान या विज्ञान।

अर्थात आत्मा के ज्ञान को मनोविज्ञान कहते हैं या दूसरे शब्दों में आत्मा का ज्ञान मनोविज्ञान कहलाता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है की आत्मा का व्यापक अर्थ बता पाना नामुमकिन अतः उन्होंने आत्मा की जगह मन को लिया, उनके अनुसार मन का अध्ययन मनोविज्ञान है। इसके पश्चात् वाटसन ने मनोविज्ञान को व्यवहार का अध्ययन कहा। अतः मनोविज्ञान को व्यवहार का अध्ययन कहा जाता है। इसी प्रकार से मनोविज्ञान को पहले आत्मा, फिर मन तथा उसके पश्चात् व्यवहार का अध्ययन कहा गया।

उत्तर - 1(b)

मनोविज्ञान का सम्प्रत्यय – जैसे-जैसे मानव जीवन में समस्यायें बढ़ रही हैं, वैसे-वैसे मनोविज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है। मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में मनोविज्ञान की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। प्राचीन में मनोविज्ञान का उपयोगी सदियों में ज्यादा देखने को मिलता था, परन्तु वर्तमान समय में मनोविज्ञान को स्वदेशी की संज्ञा दे दी गयी अर्थात आजकल मनोविज्ञान हर किसी तथा हर पहलू में दिखने को मिल रहा है। इसलिए इसे स्वदेशी भारतीय मनोविज्ञान का सम्प्रत्यय कहा गया।

Paper Code A09 0101 T

उत्तर - 1(c)

अवधान — किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना आदि पर ध्यान केन्द्रित करना अवधान कहलाता है अर्थात ध्यान केन्द्रित करने को अवधान कहते हैं। अवधान के प्रकार निम्नलिखित हैं —

1) चयनात्मक अवधान
2) दीर्घकालिक या प्रासंगिक अवधान

1) चयनात्मक अवधान — चयनात्मक अवधान में व्यक्ति किसी एक उद्दीपन पर अवधान केन्द्रित करता है, जिससे अन्य पहलुओं पर उसका ध्यान कम या न के बराबर जा पाता है। जैसे — यदि कोई व्यक्ति बगल वाले कमरे में बैठे व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति की बात पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है तो अन्य व्यक्तियों की बातों पर उसका ध्यान कम या न के बराबर रहेगा।

3) दीर्घकालिक अवधान — दीर्घकालिक अवधान में व्यक्ति अपना ध्यान लम्बे समय तक एक ही चीज पर केन्द्रित रखता है, जिससे उत्तेजना निष्क्रिय हो जाती है। इसका उपयोग द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रडार पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए किया गया।

इस प्रकार अवधान के दो प्रकार होते हैं। इन पर कई सिद्धान्त भी बनाए गए।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1(d)

शास्त्रीय अनुबन्धन - शास्त्रीय अनुबन्धन का सिद्धान्त पावलव ने शारीरिक दैहिक जरूरतों के आधार पर किया। इसमें एक प्रकार सलाइवा (लार) के आधार पर प्रयोग किया गया। इसे ही शास्त्रीय अनुबन्धन कहा गया। पावलव ने इस क्रिया को पुनर्बलन भी कहा। पावलव ने यह प्रयोग कुत्ते पर किया।

नैमित्तिक अनुबन्धन - नैमित्तिक अनुबन्धन का सिद्धान्त स्किनर ने दिया। यह पावलव के शास्त्रीय अनुबन्धन से भिन्न था क्योंकि इसमें शारीरिक दैहिक जरूरतों के साथ - साथ सुरक्षा पर बल दिया गया। इसे ही नैमित्तिक अनुबन्धन कहा गया। स्किनर ने यह प्रयोग चूहे पर किया।

उत्तर - 1(e)

स्मृति - अधिगम द्वारा अपनी योग्यतानुसार तथ्यों, आंकड़ों तथा सूचनाओं को संग्रहित करना स्मृति है अर्थात स्मृति अधिगम द्वारा सीखी गई योग्यताओं का वह समूह है जिसका वर्तमान स्थिति में वह पुनरोत्पादन कर सकता है। स्मृति तीन प्रकार की होती है -

- स्मृति
  - संवेदी स्मृति
    - प्रतीकात्मक स्मृति
    - प्रतिध्वनि स्मृति
  - लघुकालीन स्मृति
    - तत्कालिक स्मृति
    - क्रियात्मक स्मृति
  - अल्पकालीन स्मृति
    - विवरणात्मक स्मृति
    - प्रक्रियात्मक स्मृति

Do Not Write anything in this Portion

अल्पकालिक स्मृति — वह स्मृति जो अल्प समय के लिए मस्तिष्क में रहती है, उसे अल्पकालिक स्मृति कहते हैं। अल्पकालिक स्मृति का समय ... सेकेण्ड या उससे कम का होता है।

अल्पकालिक स्मृति को दो भागों में बाँटा गया है — तत्कालिक स्मृति अर्थात जो तत्काल स्मृति में आती है और क्षण भर के लिए रहती है तथा क्रियात्मक स्मृति।

उत्तर — 1(5)

बुद्धि — हम वर्तमान स्थिति जिस प्रकार प्रतिक्रिया देते हैं वह हमारी बुद्धि कहलाती है। बुद्धि सभी प्राणियों में होती है, परन्तु यह सभी प्राणियों में एक समान नहीं होती है।

बुद्धि लब्धि (I.Q.) $= \frac{MA}{CA} \times 10$

MA = मानसिक आयु
CA = वास्तविक आयु

बुद्धि परीक्षण सर्वप्रथम बिने एवं साइमन ने किया उसके टरमन ने शीघ्र द्वारा बुद्धि लब्धि का सम्प्रत्य दिया।

Paper Code A090101T

5

उत्तर - 1(g)

व्यक्तित्व :- व्यक्तित्व का अर्थ है - Personality
इसे लैटिन भाषा के Persona से लिया गया है, जिसका अर्थ है कृत्रिम। प्राचीन नाटकों में Persona का प्रयोग मुखौटे तथा मास्क के लिए किया जाता था। जिस प्रकार मुखौटे तथा मास्क कई प्रकार के होते हैं उसी प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व के भी कई प्रकार होते हैं।
व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व इस प्रकार हैं :—

1) आनुवंशिकता
2) पर्यावरण
3) अभिप्रेरकता
4) अभिरुचि
5) रुचि आदि।

उत्तर - 1(h)

जैविक प्रेरक — जैविक प्रेरक को जन्मजात प्रेरक भी कहते हैं, इनका तात्पर्य उन प्रेरकों से है जो जन्म के साथ उत्पन्न होते हैं। जैसे — भूख, प्यास, नींद, sex आदि। यह जैविक प्रेरक हैं इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति जरूरी होती है अर्थात यह सभी प्राणियों में होते हैं तथा इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना जरूरी होता है। इनके लिए किसी बाह्य अभिप्रेरणा की आवश्यकता नहीं होती है।

Paper Code A0901011T

सामाजिक प्रेरक – सामाजिक प्रेरक को अर्जित प्रेरक भी कहते हैं अर्थात वह प्रेरक जो जन्म के बाद वातावरण या समाज से अर्जित किये जाते हैं उन्हें सामाजिक प्रेरक कहते हैं।

उत्तर – 1(i)

संवेग – संवेग का अर्थ है Emotion अर्थात संवेग लैटिन भाषा के Emovere से लिया गया है अर्थात इसकी उत्पत्ति Emovere से हुई है, जिसका अर्थ है उत्तेजित अवस्था अर्थात संवेग का अर्थ है या कह सकते हैं कि संवेग व्यक्ति के उत्तेजित अवस्था को कहते हैं।

1) संवेग रूप तीव्र मनोविज्ञान अवस्था है।
2) संवेग में कई मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं।
3) संवेग में कई भाव होते हैं।
4) संवेग रूप जटिल प्रक्रिया है।

संवेग के प्रकार

1) Joy (उत्साह)
2) Happy (खुशी)
3) Anger (गुस्सा)
4) Surprise (आश्चर्य)
5) Sad (दुःख)
घृणा (न

Paper Code A0901011T

7

खण्ड – ब
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर – 5

विस्मरण – स्मृति चिन्हों का ह्रास होना विस्मरण कहलाता है अर्थात जो स्मृति चिन्ह हम अपनी स्मृति में बनाते हैं उनका स्मरण न कर पाना विस्मरण कहलाता है। अतः हम कह सकते हैं कि जो भी तथ्य, आँकड़े तथा सूचनायें जिनको हम स्मृति चिन्ह द्वारा मस्तिक या स्मृति में संग्रह करते हैं उनका पुनः स्मरण न कर पाना विस्मरण कहलाता है। विस्मरण के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं –

1) ह्रास या अनुप्रयोग में कमी – ह्रास या अनुप्रयोग में कमी से तात्पर्य है जब हम किसी स्मरण की हुई स्मृति का अभ्यास या प्रयोग नहीं करते हैं या कम करते हैं तो स्मृति का ह्रास होता है जिससे विस्मरण की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः विस्मरण की स्थिति उत्पन्न न हो इसके लिए बार-बार प्रयोग करते रहना चाहिए।

2) बाधा उत्पन्न करने वाले कारक – ऐसे कारक जो स्मरण की हुई जानकारी को पुनः स्मरण करने में बाधा उत्पन्न करते हैं, उनका समाधान करना चाहिए तथा उनसे बचना चाहिए। ऐसे कारक जो बाधा उत्पन्न करते हैं उनसे दूर रहना चाहिए।

Paper Code A09010 11

अभिप्रेरणात्मक कारक — किसी भी स्थिति में या किसी भी कार्य को करने के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है। अभिप्रेरणा वह युक्ति है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है अर्थात यदि व्यक्ति अभिप्रेरित ही नहीं होगा, काम करने के लिए या किसी स्मृति को स्मरण करने के लिए प्रेरित ही नहीं होगा तो किसी स्थिति में भी विस्मरण की स्थिति पैदा हो जायेगी।

वातावरण सम्बन्धी कारक — यदि वातावरण में हमें ऐसा आस-पास माहौल नहीं मिलेगा जिससे हम बार-बार स्मृतियों का स्मरण करें तो विस्मरण की स्थिति उत्पन्न होने लगेगी।

अभ्यास की कमी — अभ्यास जितना कम किया जायेगा उतना ही स्मरण की गई स्मृतियों को पुनः स्मरण करना मुश्किल होता जायेगा और निरन्तर अभ्यास की कमी से विस्मरण की स्थिति उत्पन्न हो जाता है।

इस प्रकार विस्मरण स्मृति का ह्रास होने से, बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों से, अभिप्रेरणा की कमी से, वातावरण सम्बन्धी कारक से, अभ्यास की कमी से उत्पन्न होता है अतः हमें इस कारकों पर ध्यान देना चाहिए तथा इनका समाधान करना चाहिए, जिससे विस्मरण की स्थिति उत्पन्न न हो।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code: A0 9 0 1 0 1 T

खण्ड - स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर – 7

मासलो – मासलो ने पदानुक्रमिक आवश्यकताओं का सिद्धान्त दिया, जिसे मासलो का पदानुक्रमिक सिद्धान्त कहा गया। इस सिद्धान्त में व्यक्ति की जरूरतों को क्रम बद्ध किया गया। जिस आवश्यकता क्रम जितना नीचे है, वह आवश्यकता उतनी ही जरूरी है तथा जब तक नीचे वाली आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो जाती व्यक्ति ऊपर वाली आवश्यकता के बारे में नहीं सोच सकता। मासलो का पदानुक्रमिक सिद्धान्त इस प्रकार है।

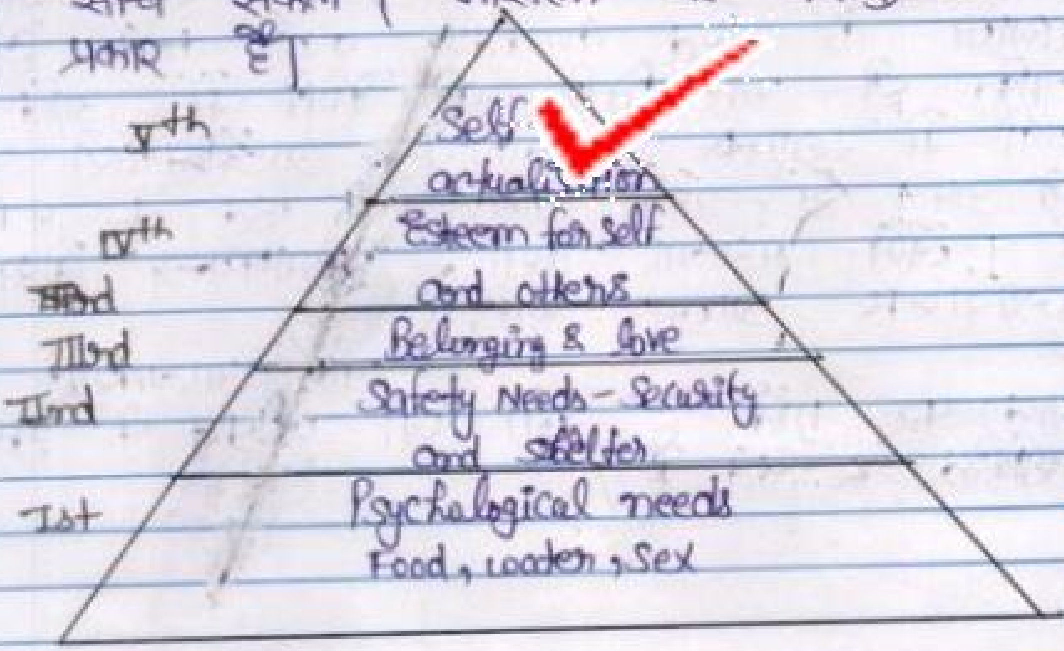

Paper Code A09010 17

Self-actualization — (आत्मसिद्धि) ऐसी आत्मसिद्धी कहते हैं जो व्यक्ति नीचे की चार आवश्यकताओं की पुर्ति कर लेता है अर्थात दैहिक शारीरिक आवश्यकतायें भूख, प्यास और sex की आवश्यकता की पूर्ण कर सुरक्षा की आवश्यकताओं को पूरा कर प्यार तथा सम्बन्ध बना लेता है और समाज में सम्मान प्राप्त कर लेता है वह इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए सोचता है।

आत्म सम्मान पाने वाला हर व्यक्ति अर्थात चारों आवश्यकताओं को पूरा करने वाला हर व्यक्ति आत्मसिद्धि के बारे में नहीं सोच पाता। इस क्रम में वही व्यक्ति आते हैं जो नैतिक मूल्यों का निर्धारण करते हैं तथा स्वंय से पहले समाज के बारे में सोचते हैं। अर्थात स्वंय से पहले समाज के हित के लिए कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्ति ही आत्मसिद्धि की श्रेणी में आते हैं। इस श्रेणी में महापुरुष, क्रान्तिकारी, आन्दोलनकारी आते हैं। जो अपने से पहले समाज के हित के प्रति सोचते हैं। जैसे- महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद आदि।

अतः आत्मसिद्धि वही प्राप्त कर पाते हैं जो जो जीवन के मूल्यों को निर्धारित कर लेते हैं।

Paper Code

11

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

14

X

Paper Code

15

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

16

Paper Code

17

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

20

X

Paper Code

21

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion